International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 19-11-2025, Accepted: 18-12-2025, Published: 02-01-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 4-6

भारतीय षड्दर्शनों की वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में प्रासंगिकता का अध्ययन

मीना खत्री[1], डॉ. मृदुला शर्मा[2]
[1] शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ, राजस्थान, भारत
[2] शोध निर्देशिका, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ, राजस्थान, भारत

सांरश
प्रस्तुत शोध का उद्देश्य भारतीय षड्दर्शनों –सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदांत की वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना था। आधुनिक शिक्षा प्रणाली तकनीकी दक्षता, प्रतिस्पर्धा एवं सूचना विस्तार पर अधिक केंद्रित होती जा रही है, जिसके परिणामस्वरूप मानसिक संतुलन, नैतिक मूल्य, मानवीय संवेदनशीलता तथा आत्मबोध जैसे पक्ष अपेक्षाकृत उपेक्षित हो रहे हैं। इस अध्ययन में भारतीय षड्दर्शनों के प्रमुख दार्शनिक सिद्धांतों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि ये दर्शन आधुनिक शिक्षा की अनेक चुनौतियों के समाधान हेतु सार्थक दृष्टि प्रदान करते हैं। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सांख्य दर्शन आधुनिक मनोवैज्ञानिक शिक्षा में व्यक्तित्व विकास, भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं आत्म–जागरूकता का सुदृढ़ आधार प्रस्तुत करता है, जबकि योग दर्शन मानसिक स्वास्थ्य, एकाग्रता एवं आत्मसंयम के विकास में अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है। न्याय दर्शन आलोचनात्मक चिंतन, विश्लेषणात्मक तर्क क्षमता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक है, वहीं वैशेषिक दर्शन विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान के लिए निरीक्षण और तर्क पर आधारित पद्धति को सुदृढ़ करता है। मीमांसा दर्शन शिक्षा को नैतिकता, कर्तव्यबोध एवं चरित्र निर्माण से जोड़ता है, जबकि वेदांत दर्शन समग्र, मूल्यपरक एवं मानवतावादी शिक्षा की अवधारणा को सुदृढ़ करता है। निष्कर्षतः भारतीय षड्दर्शन आधुनिक शिक्षा को केवल कौशल–आधारित या रोजगारोन्मुख न रखकर उसे संतुलित, मानवीय, मूल्यपरक एवं जीवनोन्मुख बनाने की क्षमता रखते हैं। अतः वर्तमान शैक्षिक सुधारों के संदर्भ में भारतीय षड्दर्शनों की दार्शनिक दृष्टि अत्यंत प्रासंगिक एवं मार्गदर्शक सिद्ध होती है।

मूल शब्दः भारतीय षड्दर्शन, शैक्षिक प्रासंगिकता, शिक्षा, मूल्यपरक शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, आलोचनात्मक चिंतन, भारतीय शिक्षा दर्शन

भूमिका
इक्कीसवीं शताब्दी का वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य तीव्र तकनीकी विकास, वैश्वीकरण, प्रतिस्पर्धा और उपयोगितावादी दृष्टिकोण से गहराई से प्रभावित है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था ने यद्यपि वैज्ञानिक सोच, नवाचार, कौशल विकास और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, तथापि इसके साथ–साथ नैतिक मूल्यों, आत्मानुशासन, जीवन–दृष्टि और मानवीय संवेदनशीलता का ह्रास भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन नहीं, बल्कि मानव में विवेक, चरित्र और आत्मबोध का विकास करना है (राधाकृष्णन, 1951)। ऐसे परिवर्तित शैक्षिक संदर्भ में भारतीय षड्दर्शनों के शैक्षिक विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा और वेदांत ये सभी दर्शन शिक्षा को केवल ज्ञान संचय की प्रक्रिया न मानकर जीवन निर्माण की साधना के रूप में देखते हैं। न्याय दर्शन का तर्कप्रधान दृष्टिकोण आज आलोचनात्मक चिंतन और तार्किक विवेचन के विकास में सहायक है, जबकि वैशेषिक दर्शन का वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण आधुनिक विज्ञान शिक्षा से सीधा सामंजस्य स्थापित करता है। सांख्य दर्शन का विवेक और आत्मज्ञान आज की भौतिकतावादी एवं तनावग्रस्त शिक्षा प्रणाली में मानसिक संतुलन प्रदान करता है। योग दर्शन मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक स्थिरता और आत्मनियंत्रण के विकास के माध्यम से समकालीन शिक्षा की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता को पूर्ण करता है, जिसे आज योग शिक्षा और वेल–बीइंग एजुकेशन के रूप में वैश्विक स्तर पर स्वीकार किया जा रहा है। एम. हिरियन्ना के अनुसार भारतीय दर्शन का मूल उद्देश्य जीवन में संतुलन और समरसता की स्थापना है, जो शिक्षा के माध्यम से ही संभव है (हिरियन्ना, 1952)। पूर्वमीमांसा दर्शन कर्तव्य, अनुशासन और नैतिक कर्म को शिक्षा का आधार मानता है, जो वर्तमान मूल्य–संकट से जूझती शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यंत उपयोगी है। वहीं वेदांत दर्शन आत्मा और ब्रह्म की अद्वैतता के सिद्धांत के माध्यम से आत्मचिंतन, आत्मसाक्षात्कार और सार्वभौमिक चेतना का विकास करता है, जो आज की वैश्विक नागरिकता की अवधारणा से पूर्णतः संगत है। सुरेन्द्रनाथ दासगुप्ता का मत है कि भारतीय दर्शन की शक्ति उसकी व्यावहारिकता में निहित है, जो उसे प्रत्येक युग में प्रासंगिक बनाती है (दासगुप्ता, 1922)।

शोध की आवश्यकता
समकालीन संबंधित साहित्य से यह ज्ञात होता है कि भारतीय षड्दर्शनों के शैक्षिक विचारों को आधुनिक संदर्भ में समझने के प्रयास किए गए हैं। सिन्हा (2018) ने न्याय दर्शन को Critical Thinking से जोड़ा, राव (2022) ने मीमांसा दर्शन को character-building education का आधार माना, जबकि कुमार (2023) और पिल्लई एवं जॉर्ज (2024) ने वेदांत दर्शन को नैतिकता, आत्मबोध और मूल्य–आधारित शिक्षा से संबद्ध किया। इसी प्रकार मलिक, तौसीफ एवं जहरा (2024) ने षड्दर्शनों की ज्ञानमीमांसा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किकता के विकास से जोड़ा। फिर भी, इन अध्ययनों में वर्तमान शिक्षा की चुनौतियों जैसे मूल्य संकट, मानसिक तनाव, नैतिक विचलन और यांत्रिक शिक्षा के संदर्भ में षड्दर्शनों की समग्र एवं व्यावहारिक प्रासंगिकता का समन्वित विश्लेषण नहीं किया गया है। अधिकांश शोध या तो दार्शनिक विवेचना तक सीमित हैं या आधुनिक शिक्षा से आंशिक संबंध स्थापित करते हैं। अतः वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में भारतीय षड्दर्शनों के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन आवश्यक है, जिससे कि शिक्षा को मूल्यपरक, मानवीय और जीवनोन्मुख दिशा प्रदान की जा सके। यह शोध आधुनिक शिक्षा सुधार और नीति–निर्माण के लिए भी सार्थक आधार प्रदान करेगा।

शोध उद्देश्य

भारतीय षड्दर्शनों के शैक्षिक विचारों की वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में प्रासंगिकता एवं उपादेयता का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक–विश्लेषणात्मक शोध विधि अपनाई गई है। भारतीय षड्दर्शनों के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण कर उन्हें वर्तमान शैक्षिक संदर्भ एवं आधुनिक शैक्षिक चुनौतियों से तुलनात्मक रूप में संबद्ध किया गया है।

भारतीय षड्दर्शनों की वर्तमान शैक्षिक प्रासंगिकता

भारतीय दर्शन की परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध दार्शनिक परंपराओं में से एक मानी जाती है, जिसमें जीवन, जगत और मानव अस्तित्व से संबंधित मूल प्रश्नों पर गहन चिंतन किया गया है। इस परंपरा के अंतर्गत विकसित छह आस्तिक दर्शन सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत सामूहिक रूप से षड्दर्शन कहलाते हैं। ये दर्शन केवल दार्शनिक चिंतन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि मानव जीवन के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक पक्षों को दिशा प्रदान करने वाली समग्र जीवन–दृष्टि प्रस्तुत करते हैं। भारतीय षड्दर्शनों का मूल उद्देश्य मनुष्य को अज्ञान से ज्ञान की ओर, असंतुलन से संतुलन की ओर तथा बंधन से मुक्ति की ओर अग्रसर करना है। ये भारतीय षड्दर्शन मानव जीवन को बहुआयामी दृष्टि से समझने का प्रयास करते हैं और शिक्षा के लिए एक समग्र दार्शनिक आधार प्रस्तुत करते हैं।

1. सांख्य दर्शन की प्रासंगिकता

सांख्य दर्शन भारतीय दर्शन की एक प्राचीन एवं मौलिक धारा है, जिसमें प्रकृति और पुरुष के द्वैत सिद्धांत के माध्यम से सृष्टि और मानव चेतना की व्याख्या की गई है। इस दर्शन के अनुसार पुरुष शुद्ध, नित्य और साक्षी चेतना है, जबकि प्रकृति परिवर्तनशील एवं सृजनशील तत्व है। सांख्य दर्शन विवेक को मुक्ति का साधन मानता है और यह प्रतिपादित करता है कि अज्ञान बंधन का कारण है। इस दर्शन में आत्मबोध और मानसिक संतुलन को विशेष महत्त्व दिया गया है, जो शिक्षा और व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

आधुनिक मनोविज्ञान में Self and Mind के अध्ययन हेतु जो वैचारिक संरचना विकसित हुई है, उसका बौद्धिक आधार सांख्य दर्शन में निहित पुरुष और प्रकृति के द्वैत सिद्धांत से स्पष्ट रूप से मेल खाता है। सांख्य दर्शन यह प्रतिपादित करता है कि मानव व्यक्तित्व के भीतर चेतन (पुरुष) और अचेतन (प्रकृति) दोनों तत्त्व सक्रिय रूप से कार्य करते हैं। यह दृष्टि आज की शिक्षा में व्यक्तित्व विकास, भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं आत्म–जागरूकता जैसे क्षेत्रों के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। सांख्य दर्शन विद्यार्थियों को आत्मनिरीक्षण, मानसिक संतुलन एवं विवेकशील जीवन जीने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार यह दर्शन शिक्षा को आत्मबोध, आत्मनियंत्रण एवं आत्मपरिष्कार की दिशा प्रदान करता है, जो आधुनिक मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा की मूल आवश्यकता है।

2. योग दर्शन की प्रासंगिकता

योग दर्शन सांख्य दर्शन की तत्त्वमीमांसा को व्यवहारिक रूप प्रदान करता है। महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित योग दर्शन चित्तवृत्तियों के निरोध के माध्यम से आत्मदर्शन पर बल देता है। अष्टांग योग–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि के माध्यम से यह दर्शन शारीरिक, मानसिक और आत्मिक अनुशासन का मार्ग प्रस्तुत करता है। योग दर्शन मानव जीवन में संतुलन, संयम और शांति की स्थापना को अपना लक्ष्य मानता है, जिससे यह शिक्षा के मानवीय एवं मानसिक पक्ष को सुदृढ़ बनाता है।

वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक एवं तीव्र गति वाली जीवनशैली के कारण विद्यार्थियों में तनाव, असंतुलन एवं असहिष्णुता की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं। ऐसे समय में योग दर्शन का चित्तवृत्ति निरोध का सिद्धांत शिक्षा के लिए अत्यंत उपयोगी एवं प्रासंगिक सिद्ध होता है। Yoga Based Education और Mindfulness Education जैसे आधुनिक शैक्षिक प्रयोग पतंजलि के योग–सिद्धांतों की समकालीन व्याख्या हैं। योग शिक्षा विद्यार्थियों में आत्मसंयम, अनुशासन, एकाग्रता एवं मानसिक शांति का विकास करती है। आज विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में योग को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाया जाना यह सिद्ध करता है कि योग दर्शन अब केवल साधना नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला बन चुका है, जो शिक्षा के मानवीय पक्ष को सशक्त करता है।

3. न्याय दर्शन की प्रासंगिकता

न्याय दर्शन भारतीय दर्शन की तार्किक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। इस दर्शन में तर्क और प्रमाण के माध्यम से यथार्थ ज्ञान की स्थापना की गई है। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द इन चार प्रमाणों को ज्ञान के साधन मानकर न्याय दर्शन सत्य और असत्य के विवेकपूर्ण भेद पर बल देता है। यह दर्शन बौद्धिक अनुशासन, आलोचनात्मक चिंतन और तार्किक विश्लेषण को विकसित करता है, जो ज्ञानार्जन की प्रक्रिया को सुदृढ़ और वैज्ञानिक बनाता है।

न्याय दर्शन शिक्षा में तर्क और प्रमाण को ज्ञान की आधारशिला मानता है। यह दृष्टि आधुनिक शिक्षा की प्रमुख आवश्यकता आलोचनात्मक चिंतन, विश्लेषणात्मक तर्क क्षमता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सुदृढ़ आधार प्रदान करती है। सूचना विस्फोट के वर्तमान युग में न्याय दर्शन विद्यार्थियों को सत्य–असत्य, तर्क–भ्रम एवं ज्ञान–अज्ञान के बीच विवेकपूर्ण अंतर करना सिखाता है। अनुसंधान पद्धति, तर्कशास्त्र तथा वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन जैसी अवधारणाएँ न्याय दर्शन से ही प्रेरित हैं। इस प्रकार यह दर्शन आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा की बौद्धिक रीढ़ के रूप में कार्य करता है।

4. वैशेषिक दर्शन की प्रासंगिकता

वैशेषिक दर्शन पदार्थ–प्रधान यथार्थवाद का प्रतिपादन करता है। यह दर्शन सृष्टि को परमाणुओं से निर्मित मानता है तथा द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय इन छह पदार्थों के माध्यम से विश्व की संरचना की व्याख्या करता है। वैशेषिक दर्शन अनुभव, निरीक्षण और तर्क पर आधारित ज्ञान को महत्त्व देता है। इसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण मानव में विश्लेषणात्मक सोच और वस्तुनिष्ठ अध्ययन की प्रवृत्ति को विकसित करता है।

वैशेषिक दर्शन द्वारा प्रतिपादित निरीक्षण एवं तर्क की परंपरा आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति की आधारशिला है। इसकी ज्ञानमीमांसा यह सिखाती है कि प्रत्येक तथ्य को अनुभव, प्रयोग एवं प्रमाण के माध्यम से सत्यापित किया जाना चाहिए। आधुनिक शिक्षा की प्रयोगात्मक दृष्टि, अनुसंधान पद्धति तथा प्रयोगशाला संस्कृति वैशेषिक दर्शन की वैज्ञानिक सोच से मेल खाती है। यह दर्शन विद्यार्थियों में निरीक्षण, विश्लेषण एवं तर्कशीलता का विकास करता है। STEM Education के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैशेषिक दर्शन शिक्षा को वैज्ञानिकता के साथ नैतिक संतुलन प्रदान करता है।

5. मीमांसा दर्शन की प्रासंगिकता

मीमांसा दर्शन कर्म और धर्म को जीवन का मूल आधार मानता है। यह दर्शन वेदों को सर्वोच्च प्रमाण स्वीकार करता है और निष्काम कर्म को मोक्ष का साधन मानता है। मीमांसा दर्शन मानव जीवन में कर्तव्य, अनुशासन और नैतिक आचरण की स्थापना करता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को सामाजिक उत्तरदायित्व और चरित्र निर्माण की ओर प्रेरित करना है।

मीमांसा दर्शन का मूल सिद्धांत "कर्म ही पूजा है" शिक्षा को नैतिकता एवं कर्तव्यपरायणता से जोड़ता है। आधुनिक शिक्षा में जहाँ मूल्य–संकट गहराता जा रहा है, वहाँ मीमांसा दर्शन मूल्य आधारित शिक्षा की भारतीय जड़ें प्रस्तुत करता है। यह दर्शन सिखाता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि जीवन में आचरण, संयम एवं कर्तव्य की भावना विकसित करना है। मीमांसा दर्शन शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों को निष्काम कर्म, अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए प्रेरित करता है।

6. वेदांत दर्शन की प्रासंगिकता

वेदांत दर्शन भारतीय दर्शन की सर्वाधिक व्यापक एवं गहन धारा है, जिसमें अद्वैत सिद्धांत के माध्यम से आत्मा और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन किया गया है। यह दर्शन आत्मज्ञान को सर्वोच्च ज्ञान मानता है और श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन के माध्यम से आत्मसाक्षात्कार की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है। वेदांत दर्शन मानवता, करुणा, शांति और विश्वबंधुत्व जैसे मूल्यों को जीवन का केंद्र मानता है। वेदांत दर्शन आधुनिक समग्र शिक्षा और शांति शिक्षा की आत्मा है। इसका केंद्रीय संदेश आत्मा और ब्रह्म एक हैं। आधुनिक शिक्षा को मानवता, शांति एवं वैश्विक एकता की दिशा प्रदान करता है। जहाँ आधुनिक शिक्षा बाह्य ज्ञान–विस्तार पर बल देती है, वहीं वेदांत शिक्षा को आंतरिक अनुभव और आत्मबोध की ओर ले जाता है। समन्वित शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षण पद्धति और शांति अध्ययन जैसी अवधारणाएँ वेदांत की व्यावहारिक अभिव्यक्तियाँ हैं। अतः वेदांत दर्शन मूल्य–आधारित शिक्षा का सार्वभौमिक दार्शनिक आधार प्रस्तुत करता है।

भारतीय षड्दर्शनों की शिक्षाएँ आधुनिक शिक्षा के विभिन्न आयामों में प्रतिध्वनित होती हैं। सांख्य मनोवैज्ञानिक शिक्षा का आधार है, योग मानसिक स्वास्थ्य एवं एकाग्रता का मार्गदर्शक है, न्याय तार्किक एवं वैज्ञानिक सोच को पोषित करता है, वैशेषिक विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान का दार्शनिक मूल है, मीमांसा नैतिक शिक्षा एवं चरित्र निर्माण की दिशा दिखाती है तथा वेदांत समग्र एवं मूल्यपरक शिक्षा की विश्व–दृष्टि प्रस्तुत करता है। इन सभी का समन्वय आधुनिक शिक्षा के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक एवं सामाजिक आयामों को संतुलित करता है। वर्तमान समय में जब शिक्षा केवल भौतिक सफलता तक सीमित होती जा रही है, तब भारतीय षड्दर्शन शिक्षा में संतुलन, शांति एवं आत्मिक विकास का संदेश देते हैं। ये दर्शन स्पष्ट करते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पेशेवर दक्षता नहीं, बल्कि मानव निर्माण की साधना है। ज्ञान, कर्म, तर्क, साधना, विवेक एवं आत्मानुभूति इन छह तत्त्वों का समन्वय ही शिक्षा की पूर्णता का प्रतीक है।

शोध निष्कर्ष

भारतीय षड्दर्शन–सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि आधुनिक शिक्षा की अनेक जटिल समस्याओं के समाधान हेतु सशक्त दार्शनिक आधार भी प्रदान करते हैं। आज की शिक्षा प्रणाली जहाँ तकनीकी दक्षता, प्रतिस्पर्धा और भौतिक उपलब्धियों पर अधिक केंद्रित होती जा रही है, वहीं भारतीय षड्दर्शन शिक्षा को संतुलन, मूल्यबोध और मानवता की दिशा प्रदान करते हैं। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सांख्य दर्शन आधुनिक मनोवैज्ञानिक शिक्षा के लिए एक ठोस वैचारिक आधार प्रस्तुत करता है। पुरुष–प्रकृति के सिद्धांत के माध्यम से यह दर्शन आत्म–जागरूकता, भावनात्मक संतुलन और व्यक्तित्व विकास को सुदृढ़ करता है। योग दर्शन मानसिक स्वास्थ्य, एकाग्रता और आत्मसंयम के विकास में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है तथा वर्तमान तनावग्रस्त और प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षिक वातावरण में विद्यार्थियों के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। न्याय दर्शन की प्रासंगिकता आलोचनात्मक चिंतन, विश्लेषणात्मक तर्क क्षमता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संवर्धन में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। सूचना विस्फोट के वर्तमान युग में यह दर्शन विद्यार्थियों को सत्य–असत्य, तर्क–भ्रम और ज्ञान–अज्ञान के बीच विवेकपूर्ण भेद करना सिखाता है। इसी प्रकार वैशेषिक दर्शन का निरीक्षण एवं तर्क पर आधारित दृष्टिकोण आधुनिक विज्ञान शिक्षा, अनुसंधान पद्धति और वैज्ञानिक चिंतन के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। मीमांसा दर्शन शिक्षा को नैतिकता, कर्तव्यपरायणता और चरित्र निर्माण से जोड़ता है। यह दर्शन वर्तमान मूल्य–संकट की स्थिति में शिक्षा को निष्काम कर्म, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व की दिशा प्रदान करता है। वहीं वेदांत दर्शन समग्र, मूल्यपरक और मानवतावादी शिक्षा की अवधारणा को सुदृढ़ करता है, जो शांति शिक्षा, समन्वित शिक्षा और आध्यात्मिक शिक्षण पद्धति के रूप में आधुनिक शिक्षा में अभिव्यक्त होती है।

समग्र रूप से भारतीय षड्दर्शन आधुनिक शिक्षा के बौद्धिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक सभी आयामों को संतुलित करने की क्षमता रखते हैं। ये दर्शन शिक्षा को केवल रोजगारोन्मुख प्रक्रिया न मानकर मानव निर्माण की साधना के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। अतः यदि आधुनिक शिक्षा प्रणाली भारतीय षड्दर्शनों में निहित दार्शनिक मूल्यों और शैक्षिक दृष्टियों को आत्मसात करे, तो शिक्षा अधिक मानवीय, मूल्यपरक, संतुलित और जीवनोन्मुख बन सकती है।

संदर्भ सूची

1. कुमार, आनंद. (2023). रेलीवेंस आफ षड्दर्शन इन कंटेंपरेरी एजुकेशन। जर्नल ऑफ इंडियन स्टडीज, 11(1), 52–64.
2. पिल्लई, डी. एवं जॉर्ज, एम. (2024). इक्कीसवीं सदी की शिक्षा में षड्दर्शन के संज्ञानात्मक और नैतिक आयाम। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल थॉट, 15(2), 56–70।
3. राव, एन. एस. (2022). मीमांसा दर्शन की शैक्षिक प्रासंगिकताः एक तुलनात्मक विवेचन। जर्नल ऑफ इंडियन स्टडीज, 14(3), 77–88।
4. सिन्हा, आर. (2018). भारतीय तर्कशास्त्र और शिक्षा के विकास में न्याय एवं वैशेषिक दर्शनों की भूमिका। फिलॉसफी टुडे, 62(4), 52–63।
5. मलिक, तौसीफ एवं जहरा, अनम। (2024). षड्दर्शन की ज्ञानमीमांसा द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कशीलता का संवर्धनः प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरावलोकन। आसरा यूजीसी केयर ग्रुप–1 अंतरराष्ट्रीय जर्नल, 13(3), 45–58।
6. दासगुप्ता, एस. न. (1922). ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी (भाग–1). कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. हिरियन्ना, एम. (1952). आउटलाइन ऑफ इंडियन फिलॉसफी. लंदनः जॉर्ज ऐलन एंड अनविन।
8. राधाकृष्णन, एस. (1951). इंडियन फिलॉसफी (भाग–1 एवं 2). लंदनः जॉर्ज ऐलन एंड अनविन।
9. शर्मा, चन्द्रधर (2000). भारतीय दर्शनः एक आलोचनात्मक सर्वेक्षण. दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास।